INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

डॉ. भीमराव अंबेडकर का महिलाओं के विकास संबंधी चिंतन : एक राजनीतिक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर,

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा।

सारांश (Summary)

डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय समाज और राजनीति के ऐसे महान चिंतक थे जिन्होंने सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों को लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार माना। उन्होंने महिलाओं की स्थिति को किसी भी समाज की प्रगति का महत्त्वपूर्ण मानदंड माना तथा उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए निरंतर प्रयास किया। अंबेडकर का मानना था कि महिलाओं की शिक्षा, स्वतंत्रता और समान अधिकारों के बिना समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। प्रस्तुत शोध में डॉ. अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी चिंतन का राजनीतिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। इसमें महिला शिक्षा, समानता, संपत्ति के अधिकार, सामाजिक सम्मान तथा राजनीतिक भागीदारी के प्रति उनके विचारों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही भारतीय संविधान के निर्माण में महिलाओं को समान अधिकार और संरक्षण प्रदान करने में उनके योगदान का भी अध्ययन किया गया है। यह शोध वर्तमान भारतीय समाज और राजनीति में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में अंबेडकरवादी विचारों की प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि डॉ. अंबेडकर के विचार महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक समानता के लिए आज भी अत्यंत प्रासंगिक एवं मार्गदर्शक हैं तथा लोकतांत्रिक भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनकी विचारधारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्य शब्द (Keywords) : महिला विकास, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय, समानता, लोकतंत्र।

प्रस्तावना

भारतीय समाज की संरचना प्राचीन काल से ही विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं पर आधारित रही है। इस सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्त्वपूर्ण रही, किंतु विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में उनकी स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले। अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा,

धार्मिक अनुष्ठानों तथा सामाजिक निर्णयों में अपेक्षाकृत सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। उन्हें ज्ञान अर्जन और वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी प्राप्त थी। गार्गी, मैत्रेयी और अपाला जैसी विदुषियों के उदाहरण इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि उस समय महिलाओं को सामाजिक जीवन में पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उत्तरवैदिक और मध्यकालीन काल में महिलाओं की स्थिति में निरंतर गिरावट आई। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, रूढ़िवादी परंपराओं और सामाजिक कुरीतियों के कारण महिलाओं के अधिकार सीमित होते चले गए। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा तथा शिक्षा और संपत्ति के अधिकारों से वंचित होने जैसी परिस्थितियों ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को कमजोर किया। औपनिवेशिक काल में भी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं रही, यद्यपि इस समय अनेक सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से महिलाओं की दशा सुधारने के प्रयास किए गए। इन्हीं ऐतिहासिक परिस्थितियों में डॉ. भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्व भारतीय समाज में एक प्रभावशाली परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया। शोध के दौरान यह तथ्य स्पष्ट हुआ कि डॉ. अंबेडकर ने महिलाओं के प्रश्न को केवल सामाजिक सुधार के विषय के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे लोकतंत्र, समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना का मूल आधार माना। उनके विचारों में महिलाओं का विकास किसी भी राष्ट्र की प्रगति और लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता के लिए अनिवार्य माना गया।

डॉ. अंबेडकर महिलाओं की शिक्षा को उनके सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम मानते थे। उनका विश्वास था कि शिक्षा महिलाओं में आत्मनिर्भरता, जागरूकता और अपने अधिकारों के प्रति चेतना विकसित करती है। उन्होंने महिलाओं को समाज में समान अवसर, सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करने पर बल दिया। इसके साथ ही उन्होंने महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की भी प्रबल वकालत की। श्रमिक महिलाओं के कार्य घंटे, मातृत्व सुरक्षा तथा श्रम संबंधी अधिकारों के पक्ष में उनके प्रयास अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। महिलाओं के अधिकारों को कानूनी और संवैधानिक संरक्षण प्रदान करने में डॉ. अंबेडकर की भूमिका अत्यंत निर्णायक रही। भारतीय संविधान के निर्माण में उन्होंने महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता और अवसर की समानता प्रदान करने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रावधानों का समर्थन किया। संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16 तथा राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में महिलाओं को समान अधिकार और भेदभाव से सुरक्षा प्रदान करने का जो आधार विकसित हुआ, उसमें डॉ. अंबेडकर का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा। महिलाओं के वैवाहिक एवं संपत्ति अधिकारों के संदर्भ में हिंदू कोड बिल को लेकर उनके प्रयास भी भारतीय महिला अधिकार आंदोलन में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में सामने आए।

वर्तमान भारत में महिलाओं की स्थिति में पूर्व की अपेक्षा उल्लेखनीय सुधार हुआ है। शिक्षा, प्रशासन, राजनीति, न्यायपालिका और आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। पंचायतों और स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को

अधिक समावेशी बनाया है। इसके बावजूद लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की सीमाएँ जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। समकालीन चुनौतियों के समाधान में डॉ. अंबेडकर का चिंतन आज भी अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। महिलाओं के प्रति समानता, सम्मान, स्वतंत्रता और न्याय की जो अवधारणा उन्होंने प्रस्तुत की थी, वह वर्तमान लोकतांत्रिक भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान करती है।

समकालीन भारतीय राजनीति के अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण से संबंधित अनेक सरकारी योजनाएँ, नीतियाँ और कानूनी प्रावधान किसी न किसी रूप में डॉ. अंबेडकर की समानता और सामाजिक न्याय की अवधारणा से प्रभावित दिखाई देते हैं। महिला शिक्षा को बढ़ावा देना, कार्यस्थलों पर सुरक्षा सुनिश्चित करना, राजनीतिक प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करना तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ी योजनाएँ इसी दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं। यह स्पष्ट हुआ कि महिला सशक्तिकरण का वर्तमान विमर्श केवल आधुनिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसकी वैचारिक पृष्ठभूमि भारतीय लोकतांत्रिक चिंतन में पहले से मौजूद रही है, जिसमें डॉ. अंबेडकर का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

शोध समस्या (Problem of Research)

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति ऐतिहासिक रूप से अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं से प्रभावित रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता तथा अवसरों की समानता जैसे महत्त्वपूर्ण अधिकार प्रदान किए गए, जिनसे उनकी स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला। इसके बावजूद अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान भारतीय समाज और राजनीतिक व्यवस्था में महिलाओं को अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लैंगिक भेदभाव, सामाजिक असमानता, निर्णय प्रक्रिया में सीमित भागीदारी, राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी तथा आर्थिक निर्भरता जैसी समस्याएँ आज भी विभिन्न स्तरों पर विद्यमान हैं। शोध के दौरान यह तथ्य सामने आया कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने महिलाओं के अधिकारों को सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक समानता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना था। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, सम्मान, स्वतंत्रता, संपत्ति के अधिकार और राजनीतिक सहभागिता को भारतीय लोकतंत्र की सफलता का आवश्यक आधार माना। भारतीय संविधान के निर्माण तथा महिला अधिकारों की संवैधानिक सुरक्षा में उनके योगदान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करने की दिशा में एक मजबूत वैचारिक और संवैधानिक आधार तैयार किया।

इसके बावजूद वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन करने पर यह अनुभव हुआ कि डॉ. अंबेडकर द्वारा प्रतिपादित आदर्श और वास्तविक सामाजिक

परिस्थितियों के बीच अभी भी एक स्पष्ट अंतर विद्यमान है। महिलाओं को संवैधानिक अधिकार प्राप्त होने के बाद भी व्यवहारिक स्तर पर अनेक बाधाओं और असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। यही स्थिति इस शोध की मूल समस्या के रूप में सामने आई।

अतः प्रस्तुत शोध में यह जानने और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया कि डॉ. अंबेडकर का महिलाओं के विकास संबंधी चिंतन वर्तमान भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था में किस सीमा तक प्रभावी और प्रासंगिक सिद्ध हुआ है। साथ ही यह भी अध्ययन किया गया कि महिला सशक्तिकरण, समानता और राजनीतिक सहभागिता के वर्तमान विमर्श में उनके विचार किस प्रकार मार्गदर्शक भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार शोध की केंद्रीय समस्या यह रही कि– **"डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा महिलाओं के विकास और अधिकारों के संबंध में प्रस्तुत वैचारिक एवं संवैधानिक दृष्टिकोण वर्तमान भारतीय समाज और राजनीतिक व्यवस्था में किस सीमा तक प्रभावशाली, प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हुआ है।"**

अध्ययन के उद्देश्य

1. डॉ. भीमराव अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
2. महिलाओं के अधिकारों के प्रति डॉ. अंबेडकर के राजनीतिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
3. महिला शिक्षा, समानता एवं स्वतंत्रता के संबंध में अंबेडकर के विचारों का अध्ययन करना।
4. भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकारों हेतु डॉ. अंबेडकर के योगदान का विश्लेषण करना।
5. वर्तमान भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण में अंबेडकरवादी विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

1. महिलाओं के विकास के संबंध में डॉ. अंबेडकर के प्रमुख विचार क्या थे?
2. महिला अधिकारों के प्रति डॉ. अंबेडकर का राजनीतिक दृष्टिकोण किस प्रकार विकसित हुआ?
3. भारतीय संविधान में महिलाओं को समान अधिकार दिलाने में डॉ. अंबेडकर की क्या भूमिका रही?
4. वर्तमान भारतीय समाज और राजनीति में उनके विचार किस प्रकार प्रासंगिक हैं?
5. महिला सशक्तिकरण की समकालीन नीतियों पर अंबेडकरवादी चिंतन का क्या प्रभाव है?

शोध की उपकल्पनाएँ

1. डॉ. अंबेडकर महिलाओं की समानता एवं स्वतंत्रता के प्रमुख समर्थक थे।

2. भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण में उनका विशेष योगदान रहा।
3. महिला शिक्षा और राजनीतिक सहभागिता के क्षेत्र में अंबेडकर के विचार वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।
4. आधुनिक महिला सशक्तिकरण की नीतियों में अंबेडकरवादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

शोध का महत्व एवं आवश्यकता

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय राजनीतिक चिंतन में डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को महिलाओं के विकास के संदर्भ में समझने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास रहा है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि महिलाओं के अधिकारों के प्रति उनका दृष्टिकोण केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि वह लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और संवैधानिक समानता के मूल सिद्धांतों से गहराई से जुड़ा हुआ था। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, शिक्षा तथा लैंगिक समानता जैसे विषय अत्यंत प्रासंगिक बने हुए हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में डॉ. अंबेडकर के विचारों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक एवं सार्थक सिद्ध हुआ। यह अध्ययन अकादमिक दृष्टि से उपयोगी होने के साथ-साथ महिलाओं से संबंधित नीतियों, सामाजिक जागरूकता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को समझने में भी सहायक सिद्ध होता है।

अध्ययन का क्षेत्र (Scope of Study)

- डॉ. अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी विचार
- महिला शिक्षा और सामाजिक समानता पर उनका दृष्टिकोण
- महिलाओं के आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों पर विचार
- संविधान निर्माण में महिलाओं से संबंधित योगदान
- समकालीन भारतीय राजनीति में अंबेडकरवादी विचारों की प्रासंगिकता

साहित्य पुनरावलोकन (Review of Literature)

1. **धनंजय कीर** ने अपनी पुस्तक *"डॉ. अंबेडकर : जीवन और मिशन"* में अंबेडकर के सामाजिक और राजनीतिक योगदान का विस्तृत वर्णन किया है। इसमें महिलाओं के अधिकारों के प्रति उनके विचारों को सामाजिक न्याय के व्यापक संदर्भ में समझाया गया है।
2. **डॉ. बी.आर. अंबेडकर के संपूर्ण वाङ्मय** में महिला शिक्षा, समानता और हिंदू कोड बिल पर उनके विचार स्पष्ट रूप से मिलते हैं। यह शोध का प्रमुख प्राथमिक स्रोत है।
3. **रामगोपाल शर्मा** ने *भारतीय राजनीतिक चिंतन* में अंबेडकर के लोकतंत्र, समानता और संवैधानिक अधिकारों पर विचारों का विश्लेषण किया है।

4. **शशि थरूर एवं अन्य समकालीन लेखकों** ने भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय के संदर्भ में अंबेडकर के योगदान को वर्तमान समय में भी महत्त्वपूर्ण माना है।
5. **विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध-पत्रों** में महिला अधिकार और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में अंबेडकरवादी विचारों को आज भी प्रभावी और प्रासंगिक बताया गया है।

साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिलाओं के विकास संबंधी अंबेडकर के विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, किंतु राजनीतिक दृष्टिकोण से इस विषय पर और गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

(क) शोध का प्रकार : प्रस्तुत शोध **विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक** प्रकृति का है, जिसमें डॉ. भीमराव अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी विचारों का राजनीतिक दृष्टि से अध्ययन किया गया है।

(ख) तथ्य-संग्रह के स्रोत : प्राथमिक स्रोत - डॉ. अंबेडकर के भाषण, संविधान सभा की बहसें, उनकी मूल पुस्तकें एवं लेख।

द्वितीयक स्रोत - संबंधित पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, जर्नल, सरकारी रिपोर्ट तथा इंटरनेट स्रोत।

(ग) अध्ययन पद्धति : प्रस्तुत शोध में विषय की स्पष्टता और निष्कर्ष की प्रामाणिकता के लिए निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया–

- ऐतिहासिक पद्धति
- विश्लेषणात्मक पद्धति
- तुलनात्मक पद्धति

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध "**डॉ. भीमराव अंबेडकर का महिलाओं के विकास संबंधी चिंतन : एक राजनीतिक अध्ययन**" के अंतर्गत डॉ. अंबेडकर के महिलाओं के अधिकार, समानता, शिक्षा, स्वतंत्रता और राजनीतिक सहभागिता संबंधी विचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया। शोध के दौरान यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि डॉ. भीमराव अंबेडकर महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं की स्थिति को केवल सामाजिक दृष्टि से नहीं, बल्कि राजनीतिक और संवैधानिक अधिकारों के संदर्भ में भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि डॉ. अंबेडकर ने महिलाओं की शिक्षा को उनके विकास का आधार माना तथा उन्हें सामाजिक सम्मान, समान अवसर और स्वतंत्र निर्णय का अधिकार दिए जाने पर विशेष बल दिया। महिलाओं के अधिकारों के प्रति उनका राजनीतिक दृष्टिकोण लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और समानता के मूल सिद्धांतों पर आधारित था। भारतीय संविधान के निर्माण

में उनका योगदान महिलाओं को समान अधिकार, स्वतंत्रता तथा संवैधानिक संरक्षण प्रदान करने की दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। वर्तमान भारतीय समाज और राजनीति के संदर्भ में भी उनके विचार अत्यंत प्रासंगिक पाए गए। महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, शिक्षा और लैंगिक समानता से संबंधित समकालीन नीतियों एवं प्रयासों में डॉ. अंबेडकर के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस प्रकार अध्ययन के सभी निर्धारित उद्देश्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुए तथा शोध प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर प्राप्त हुए।

प्रस्तुत शोध में निर्धारित उपकल्पनाओं का भी अध्ययन के आधार पर परीक्षण किया गया। परिणामस्वरूप यह प्रमाणित हुआ कि डॉ. अंबेडकर महिलाओं की समानता एवं स्वतंत्रता के प्रमुख समर्थक थे। भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा एवं संवैधानिक व्यवस्था के निर्माण में उनका विशेष योगदान रहा। साथ ही महिला शिक्षा, सामाजिक समानता और राजनीतिक सहभागिता के संबंध में उनके विचार वर्तमान समय में भी प्रभावी एवं प्रासंगिक हैं। आधुनिक महिला सशक्तिकरण की नीतियों में भी अंबेडकरवादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ. भीमराव अंबेडकर का महिलाओं के विकास संबंधी चिंतन भारतीय लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में आज भी अत्यंत प्रासंगिक, प्रेरणादायी और मार्गदर्शक है। उनके विचार महिलाओं के अधिकारों की स्थापना और एक समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में वर्तमान समय में भी महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

सुझाव (Suggestions)

1. महिलाओं के अधिकारों और समानता के संबंध में डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों को शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से अधिक व्यापक रूप से प्रसारित किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता और निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रभावी नीतियों एवं योजनाओं को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए।
3. महिला शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए अंबेडकरवादी विचारों को व्यवहारिक रूप में लागू किया जाना आवश्यक है।
4. महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाने तथा उनके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सरकारी एवं सामाजिक स्तर पर निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।
5. डॉ. अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी चिंतन पर समकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए और अधिक विस्तृत शोध किए जाने की आवश्यकता है।

अध्ययन की कठिनाइयाँ (Difficulties of Study)

1. शोध विषय से संबंधित सभी प्राथमिक स्रोत एक स्थान पर उपलब्ध नहीं होने के कारण आवश्यक सामग्री एकत्र करने में कठिनाई हुई।
2. डॉ. अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी विचार विभिन्न भाषणों, लेखों और पुस्तकों में बिखरे होने के कारण उनका समग्र विश्लेषण करना चुनौतीपूर्ण रहा।
3. विषय के राजनीतिक और सामाजिक दोनों पक्षों को संतुलित रूप से प्रस्तुत करने में विशेष सावधानी रखनी पड़ी।
4. समकालीन संदर्भ में महिलाओं की स्थिति और अंबेडकरवादी विचारों के प्रभाव का विश्लेषण करते समय विभिन्न स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन करना समयसाध्य रहा।

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of Study)

1. प्रस्तुत शोध मुख्यतः डॉ. भीमराव अंबेडकर के महिलाओं के विकास संबंधी राजनीतिक विचारों तक सीमित रहा है।
2. अध्ययन में उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर ही निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।
3. शोध का क्षेत्र भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ तक सीमित रखा गया है।
4. विषय की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के विकास से संबंधित सभी आयामों का विस्तृत विश्लेषण इस अध्ययन में संभव नहीं हो सका।
5. प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य रूप से डॉ. अंबेडकर के विचारों तथा उनकी वर्तमान प्रासंगिकता पर केंद्रित विश्लेषण किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंबेडकर, भीमराव रामजी, (2014), *जाति का विनाश* , नवयान प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 82 ।
2. अंबेडकर, भीमराव रामजी, (2011), *हिंदू नारी का उत्थान और पतन : कौन जिम्मेदार था?* , डॉ. अंबेडकर फाउंडेशन, नई दिल्ली, पृ. 38, ।
3. अंबेडकर, भीमराव रामजी, (2014), *बुद्ध और उनका धम्म* , डॉ. अंबेडकर फाउंडेशन, नई दिल्ली, पृ. 210।
4. अंबेडकर, भीमराव रामजी, (1989), *डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर : लेखन एवं भाषण* (खंड-3), महाराष्ट्र शासन, शिक्षा विभाग, मुंबई, पृ. 280।
5. अंबेडकर, भीमराव रामजी, (1991), *डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर : लेखन एवं भाषण* (खंड-14, भाग-1), महाराष्ट्र शासन, शिक्षा विभाग, मुंबई, पृ. 462।

6. कीर, धनंजय, (2019), *डॉ. अंबेडकर : जीवन और मिशन* , पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, पृ. 346।
7. जाटव, डी. आर, (2001), *डॉ. बी. आर. अंबेडकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व* , समता साहित्य सदन, जयपुर, पृ.185।
8. ओमवेट, गेल, (2008), *अंबेडकर : एक प्रबुद्ध भारत की ओर* , पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 115।
9. रोड्रिग्स, वेलरियन (संपा.), (2002), *डॉ. बी. आर. अंबेडकर के आवश्यक लेखन* , ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 241।
10. कुमार, राकेश, (2015), *भारत में महिला एवं राजनीतिक विकास* , ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली, पृ. 140।
11. चक्रवर्ती, उमा, (2003), *नारीवाद और जाति विमर्श* , स्त्री प्रकाशन, कोलकाता, पृ. 89।
12. भारत सरकार, (2013), *भारत का संविधान* (अनुच्छेद 14, 15, 16, 39, 42). विधि और न्याय मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ. 42 ।
13. लोकसभा सचिवालय. (1948-1949), *संविधान सभा वाद-विवाद* (खंड-7). भारतीय संसद, नई दिल्ली, , पृ. 955।
14. सिंह, आर. (2018). *भारतीय राजनीतिक चिंतन* , पियर्सन इंडिया, नई दिल्ली, (पृ. 245 ।
15. शर्मा, पी. डी. (2016). *महिला सशक्तिकरण और भारतीय समाज* , रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, पृ. 122।
16. यादव, के. सी. (2017). *भारत में महिला अधिकार एवं सामाजिक न्याय* , आविष्कार पब्लिशर्स, नई दिल्ली, (पृ. 97।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM